

No. of Printed Pages : 13

**MTT-003**

**POST GRADUATE CERTIFICATE IN  
BANGLA-HINDI TRANSLATION  
PROGRAMME (PGCBHT)**

**Term-End Examination**

**June, 2023**

**MTT-003 : BANGLA-HINDI TRANSLATION IN VARIOUS  
LINGUISTIC AREAS**

**Duration : 3 Hours**

**Maximum Marks : 100**

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 13

**MTT-003**

बांग्ला-हिन्दी अनुवाद कार्यक्रम में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र

संत्रांत परीक्षा

जून-2023

**MTT-003: बांग्ला-हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद**

समय सीमा : 3 घंटे

अधिकतम अंक : 100

---

1. कविता का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद करते समय किन सावधानियों की आवश्यकता पड़ती है, उदाहरण सहित समझाइए।

20

### अथवा

समाचार संकलन में आशु अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि आशु अनुवाद में किस तरह की कठिनाइयाँ आती हैं।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए। 5

निजश्च	बन्धक	पाँउड़ा	काहिनी	ख़ि
बाजना	बश्न	रौतिमतो	आलोचना	मिछिल

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए। 5

प्रकाश	ऊँचा	अंतरराष्ट्रीय	कीचड़	रसोईघर
गलती	नज़दीक	उतरना	चूल्हा	मोड़

4. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं पाँच के बांग्ला में अर्थ बताइए और उनका हिंदी और बांग्ला में अलग-अलग प्रयोग कीजिए :

गोष्ठी	व्यवहार	सिद्धांत	अतिरिक्त	आयु
संपर्क	अनुभव	स्रोत	व्यंग्य	धूप

5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

(a) १०० वर्ष पेरिये गेल सान बांग्लार 'कन्यादान'। भारि खुशि अभिनेता थेके कलाकुशली, सबाई। सकाल थेकेई सेटे ब्यस्तता। सवार मुखे चउड़ा हासि। एमन विशेष दिन उदयापन छाड़ा जमे? मङ्गलबारेओ ताई प्रतिदिनेर श्युटींग छिलई। सङ्गे छिल केक काटार पर्वओ। दिनेर शेषे सबाई यखन जड़ो छोट्ट टेबिलटार सामने, बलमले मुखणुलो येन बलछिल, १०० पर्वेर परिश्रम सार्थक।

एई प्रजन्मेर एकबाँक अभिनेतादेर पाशापाशि एई धारावाहिक फिरियेछे आरओ दुई शक्तिशाली अभिनेताके। ताँरा अरिन्दम गङ्गोपाध्याय, मानसी सिंंह। धारावाहिक सम्प्रचारणेर आगे आनन्दबाजार डिजिटिलके अरिन्दम जानियेछिलेन, "ए रकम चिअनाट्यई खूँजछिलाम। येखाने आमार करार किछु থাকबे। एई जन्यई देड़ बहर छोट पदा थेके दूरे छिलाम। 'बाबा' एर आगेओ हयेछि। तबे एक सङ्गे पाँच मेयेर बाबा एई प्रथम। मा-हारा मेयेदेर एक हाते मानुष करब आमि।" अभिनय करते गिये ताँर प्राप्ति, 'बोनेदेर मानुष करा, बिये देओया'र मतो हारानो सृति फिरे पाओया। धारावाहिकेर परिचालक बाबु बणिक अरिन्दमेर छात्र। अभिनेतार काछे, बाबुर परिचालनाय काज करा माने गुरु-शिष्य परम्परा बजाय राखा।

10x4=40 মানসী সিংহ এই ধারাবাহিকে দাপুটে শাস্ত্রী 'মন্দিরা' অভিনেত্রীর কথায়, "অনেক দিন পরে একটা সুস্থ ধারাবাহিকের ১০০ পর্ব পেরতে দেখলাম। ভাল লাগছে। আপ্রাণ চেষ্টা করছি মাত্র ১টা শূন্য বাড়িয়ে একে ১০০০ পর্বে নিয়ে যেতে।"

(b) গরম বাড়ছে। ছাদ তপ্ত হয়ে গিয়ে উপরের তলায় থাকা এই সময় অনেকের জন্যই কষ্টকর। সে ক্ষেত্রে রাস্তা দুটো। হয় ছাদের উপর ছাউনি দিয়ে ঢেকে দিতে হবে, নইলে ঘরে এসি চালিয়ে রাখতে হবে। কিন্তু এর বাইরেও একটা রাস্তা আছে। ছাদের উপর লাগানো যেতে পারে গাছ।

তবে মনে রাখতে হবে, গ্রীষ্মের প্রবল রোদ সহ্য করতে পারবে, এমন গাছই ছাদে লাগানো যেতে পারে। না হলে রোদে ঝলসে যাবে গাছের পাতা। কোন কোন গাছ গ্রীষ্মে ছাদে রাখার জন্য আদর্শ, রইল তেমন কয়েকটির তালিকা।

জবা গাছ : ভারতীয় পরিবেশে খুব ভাল ভাবে বেঁচে থাকতে পারে জবা গাছ। বিশেষ পরিচর্যার দরকার হয় না। নিয়ম করে জল আর মাঝেসাঝে একটু সার দিলেই হল। ছাদের টবে সহজেই রাখা যায় এই গাছ। তবে প্রচন্ড ঘন হবে কি না, তা নির্ভর করে গাছটি নিয়মিত ছাঁটার উপর। উচ্চতায় বেশি বাড়তে না দিলে এই গাছ খুবই ঘন হয় আর বহরে বাড়তে থাকে।

রঙ্গন গাছ : বিভিন্ন জাতের রঙ্গন পাওয়া যায়। কারও ঘন লাল রঙের ফুল হয়, কারও গোলাপি! এমনকি সাদা রঙের ফুলের রঙ্গন গাছও পাওয়া যায়। এই গাছেরও পরিচর্যা বিশেষ দরকার নেই। ঝোপেও এই গাছ ভাল ভাবে বেঁচে থাকে। খুবই ঘন হয়। কিছু রঙ্গন লম্বাটে গোত্রের হয়। তাদের ছেঁটে রাখলে, তারাও রীতিমতো ঘন হয়ে বাড়তে পারে।

- (c) বসন্ত আসুক ঘরেও। যাতে শীতের আড়ষ্ট ভাবটা কেটে যায় চারপাশ থেকে। কিন্তু তা কী ভাবে আনা যায়? ঘরের ভিতরে তো আর ফুলের টব বসানো যায় না। এমনকি, ঘরের মধ্যে রোজ রোজ ফুল সাজানোও সম্ভব নয়। আর তা ছাড়া, কতগুলো কোণেই বা ফুল সাজানো যায়? তবে কী করা যাবে? বদলে ফেলা হবে কি ঘরের দেওয়ালের রং? তা কি সহজ কথা নাকি? মরসুমের সঙ্গে মানানসই ওয়াল পেপারে দেওয়াল মুড়ে ফেলাও কম কঠিন কাজ নয়।

তবে বসন্ত আসবে কী ভাবে ঘরে? উত্তরটা সহজ। কয়েকটা পর্দাই যথেষ্ট। বসন্ত উৎসবের আগেই বদলে যাক না ঘরের পর্দাগুলো। তা হলেই যে অর্ধেকটা ঘর পছন্দের রঙে মুড়ে যাবে।

কেমন হবে সেই পর্দা?

এ সময়টা নতুন ফুলে ভরে থাকার। ঘরের সাজের মিল থাকা দরকার চারপাশের সঙ্গে। ঘরের ভিতরে ফুল গাছ না বসানো যাক, পর্দায়

তো কয়েকটা ফুল থাকতেই পারে। পর্দার উপরে সুতো দিয়ে ফুলের কাজ হোক বা ছাপা, এ সময়ে সবটাই মানানসই। অন্য ভাবনাও ভাবা যায়। না-ই বা থাকল ফুল। কিন্তু বসন্তের রং তো আসতেই পারে পর্দায়। এক রঙা পর্দার ক্ষেত্রে বেছে নেওয়া যায় বাসন্তী কিংবা কাঁচা হলুদ। এ সময়টা পলাশের। ঘরের দেওয়াল হালকা রঙের হলে, মানানসই হতে পারে পলাশ ফুলের মতো লাল রঙের পর্দাও। এই কাজটা কঠিন নয়।

- (d) ভাল আছেন টাইগার উডস। সম্পূর্ণ সুস্থ হয়ে বুধবার সকালে বাড়ি ফিরে গেলেন এই তারকা গল্ফ খেলোয়াড়। বাড়ি ফিরে যাওয়ার পর শুভানুধ্যায়ীদের উদ্দেশে নেট মাধ্যমে টাইগারের বার্তা, "বাড়ি ফিরে পরিবারের সঙ্গে সময় কাটাতে পেরে বেশ ভাল লাগছে। গোটা দুনিয়া এই কঠিন সময় আমার পাশে ছিল। তাই সবাইকে ধন্যবাদ। ঘরে ফিরেই শরীরচর্চা শুরু করে দিয়েছি। আশা করি আগামী কয়েক দিনের মধ্যে আরও উন্নতি করব।"

গত ২৩ ফেব্রুয়ারি একটি পথ দুর্ঘটনায় তাঁর দুটো পা গুরুতর ভাবে জখম হয়েছিল। স্থানীয় সময় সকাল ৭টা ১২ মিনিটে দুর্ঘটনা ঘটে। রোলিং হিলস এস্টেট সীমান্তে উডসের গাড়ি দুর্ঘটনার কবলে পড়ে। ব্লাকহর্স রোডের হাউথর্ন বুলেভার্ড দিয়ে উত্তর দিকে যাচ্ছিল উডসের গাড়ি। তখনই গাড়িটি নিয়ন্ত্রণ হারায়। উডস নিজেই গাড়ি

চালাচ্ছিলেন। উডসের এজেন্ট মার্ক স্টেনবার্গ জানিয়েছিলেন সেই খবর।

এমন দুর্ঘ্যতনার জন্য ১৫ বারের মেজর গল্ফ চ্যাম্পিয়ন টাইগারকে লস অ্যাঞ্জেলেসের একটি বেসরকারি হাসপাতালে অনেকটা সময় কাটাতে হয়। ৪৫ বছর বয়সী এই গল্ফারের ডান পায়ের নিচের অংশে ও গোড়ালি ছাড়াও বাঁ পায়ের একাধিক জায়গায় চোট ছিল।

- (e) এক, সওয়া এক বছরে ১২ কোটির উপরে সংক্রমণ। ২৬ লক্ষের বেশি মৃত্যু। নভেল করোনাভাইরাসের এই অতিসংক্রামক ক্ষমতার বিবর্তন ঘটেছিল আগেই। বাদুড়ের শরীরে। তার পর বাদুড়ের থেকে মানব শরীরে সংক্রমণ। 'প্লস বায়োলজি' নামে জার্নালে প্রকাশিত একটি রিপোর্টে এই দাবি করা হয়েছে।

গ্লাসগো ইউনিভার্সিটি-র 'সেন্টার ফর ভাইরাস রিসার্চ' সম্প্রতি ভাইরাসটির অতিসংক্রামক চেহারার কারণ বিশ্লেষণ করে দেখেছে। গবেষণায় তারা ভাইরাসটির কয়েকশো হাজার জিনোম সিকোয়েন্স বিশ্লেষণ করে দেখে। গ্লাসগোর বিজ্ঞানীদের দাবি, পরীক্ষা করে দেখা গিয়েছে, অতিমারির প্রথম ১১ মাসে ভাইরাসের তেমন কোনও জেনেটিক বদল ঘটেনি। তবে পরে ডি৬১৪জি মিউটেশন ও অন্য আরও কিছু বদল ঘটেছে। গবেষক দলের প্রধান অস্কার ম্যাকলিয়ান বলেন, "তার মানে এই নয় যে মানব শরীরে কোনও বদল ঘটেনি।

উল্লেখযোগ্য বদল তেমন ঘটেনি। অন্য ভাইরাসের ক্ষেত্রে লাখে মিউটেশন ঘটতে দেখা যায়। এ ক্ষেত্রে সেটা অমিল ছিল।" বিজ্ঞানীদের কথায়, "খুব চমকে যাওয়ার মতো বিষয়টা শুরু থেকেই এত সংক্রামক।"

আমেরিকার টেম্পল ইউনিভার্সিটির বিজ্ঞানী সেগেই পন্ড বলেন, "সাধারণত দেখা যায়, যে সব ভাইরাস একটি প্রাণীর দেহ থেকে অন্য প্রাণীর দেহে বাসাবদল করে, সেখানে তাদের থিতু হতে সময় লাগে। তার পর তার সংক্রমণ ক্ষমতা তৈরি হয়।" কিন্তু এ ক্ষেত্রে নভেল করোনাভাইরাস বা সার্স-কোভ-২ শুরু থেকেই ব্যাপক সংক্রামক।

- (f) ঠিক এক বছর পরে বেরিয়ে পড়লাম আমরা। বিগত প্রায় দশ মাস কার্যত গৃহবন্দি। আমি ও আমার স্বামী দু'জনেই ঘুরতে ভালবাসি। আমেরিকায় করোনার বাড়াবাড়ির জন্য বেড়াতে যাওয়ায় বিরতি দিতে হয়েছিল। কিন্তু ভয়-দ্বিধাকে সঙ্গী করেই এ বার ব্যাগ গুছিয়ে ফেললাম। নভেম্বরের শেষে এক সপ্তাহব্যাপী থ্যাংস্কাগিভিং হলিডে থাকে আমেরিকায়। করোনার কথা ভেবেই এমন জায়গা বেছে নিলাম, যেখানে অতিমারির দাপট কম। টিমে আমি, বর, পাঁচ বছরের ছেলে ও আমার দুই বোন। গন্তব্য ক্যালিফোর্নিয়ার উত্তরে মাউন্ট শ্যাস্টা।



ফ্রিমন্ট থেকে যার দূরত্ব প্রায় ৩০০ মাইল, রাস্তায় দু'বার কফি ব্রেক নিয়ে পৌঁছতে সময় লাগল প্রায় ৫ ঘন্টা। থাকার জন্য এয়ার বিএনবির হোমস্টে বুক করা ছিল ড্যান্সমিয়ার নামে ছোট্ট শহরে। যাওয়ার পথে রেডিং শহরে সান ডায়াল ব্রিজ দেখে যখন আস্তানায় পৌঁছলাম, তখন ঘড়িতে সন্কে সাতটা। শীতের সময় বলে তাড়াতাড়ি অন্ধকার। তাই শেষের দিকের যাত্রাপথের কোনও দৃশ্যই দেখার সুযোগ পেলাম না। বাইরের তাপমাত্রা তখন প্রায় ৫ ডিগ্রি। ড্যান্সমিয়ার শহরে আমাদের থাকার জায়গার কাছাকাছি পৌঁছে দেখতে পেলাম, সব বাড়ি ক্রিসমাসের আলোয় সাজানো। আমার ছেলে বেশ মজা পেল। বাড়িতে ঢুকে প্রথমেই দরজার হাতল থেকে ঘরের বেশ কিছু জায়গা স্যানিটাইজ করলাম। তার পর রাতের রান্নার আয়োজন। গরম গরম মাংস-ভাত খেয়ে সে দিন রাতে বাড়িতেই বিশ্রাম।

6. निम्नलिखित में से किसी एक का बांग्ला में अनुवाद कीजिए

: 10

(क) प्राकृतिक संसाधनों के उत्कृष्ट पारिस्थितिकीय सन्तुलन को अगली पीढ़ी के लिए संरक्षित रखते हुए भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण तथा निरंतर विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के स्थानीय लोगों तथा उनके समक्ष उपलब्ध

प्राकृतिक संसाधनों में बहुमुखी सम्बन्ध है। आम तौर पर ये लोग ईश्वर के द्वारा दिए गए प्राकृतिक संसाधनों तथा विशेष रूप से वनों पर अपनी आजीविका तथा निवास के लिए आश्रित हैं। वनों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का विनाश कर गैर-योजनाबद्ध तरीके से विकास कार्य करना इनके अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। इस अद्वितीय तथा अनमोल प्राकृतिक पर्यावरण एवं उत्कृष्ट पारिस्थितिकी सन्तुलन को बनाए रखने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के विशाल संसाधनों तथा विद्युत शक्ति का विकास योजनाबद्ध तथा निरन्तर तरीके से करने पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभावों पर 'नीपको' उचित ध्यान देता है। यह अपनी परियोजनाओं के क्रियान्वयन और संचालन एवं रख-रखाव के दौरान पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए पर्याप्त उपाय करता है। यह पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी सुरक्षा से सम्बन्धित नियमों को

कार्यान्वित करने तथा उससे बंधे रहने पर सर्वोच्च ध्यान देता है।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार की सभी नीतियों तथा दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करता है। मंत्रालय पूर्वोत्तर की विशेष पर्यावरणीय परिस्थिति का विशेष ध्यान रखता है ताकि विद्युत परियोजनाओं से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की पहचान कर उसे कम किया जा सके।

- (ख) 28 दिसम्बर, 1895 विश्व इतिहास के एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन के रूप में हमेशा याद किया जाएगा। यह दिन विशेष रूप से सिनेमा प्रेमियों के लिए पूरे विश्व में महत्वपूर्ण है। इसी दिन पेरिस के ग्रैंड कैफे हाउस में, ल्यूमर ब्रदर्स ने पहली बार “सिनेमाटोग्राफ” का प्रदर्शन किया था। वह उस कैफे में बैठे सभी लोगों के लिए एक अत्यंत रोमांचकारी और आश्चर्य से भरा हुआ ऐतिहासिक दिन था। थोड़ी देर के लिए तो लोगों को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि

वे आखिर क्या देख रहे हैं ? इस तरह चलते-फिरते मूक चित्रों से विश्व में सिनेमा का प्रारंभ हुआ।

समूचे विश्व में इस अनोखी घटना की चर्चा हो रही थी कि 7 जुलाई, 1896 के दिन मुम्बई के वॉटसन होटल में आमंत्रित मेहमानों के समक्ष, ल्यूमर ब्रदर्स के प्रतिनिधियों द्वारा पहली बार एक साथ छह मूक लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। सिनेमा के आविष्कार के केवल छह महीनों के अंदर ही मुंबई को यह गौरव प्राप्त हुआ। उस दिन वॉटसन होटल में सबसे पहले 'एंटी ऑफ सिनेमाटोग्राफ" का प्रदर्शन किया गया और इसके बाद "एराइवल ऑफ ट्रेन, द सी बाथ, ए डिमॉलिशन, वर्कर्स लीविंग द फ़ैक्ट्री और लेडीज़ एण्ड सोल्जर्स ऑन व्हील्स" का प्रदर्शन किया गया। उस दिन "एराइवल ऑफ ट्रेन" के प्रदर्शन के दौरान दर्शकों को अजीब रोमांचकारी अनुभव हुआ। एक पल को तो उन्हें लगा कि जैसे ट्रेन होटल के अंदर घुस आई हो। कुछ लोग तो अपनी जगह से उठकर बाहर की ओर भागने लगे। उन सब लोगों के

लिए भी यह रोमांचकारी अनुभव सर्वथा नया और अनोखा था। इस तरह 7 जुलाई, 1896 को भारत में कला के एक महान माध्यम का आगमन हुआ जिसे सिनेमा कहा जाता है। वॉटसन होटल में प्रदर्शन के एक सप्ताह बाद 14 जुलाई, 1896 को मुम्बई के नॉवेल्टी थियेटर में, ल्यूमर ब्रदर्स के प्रतिनिधियों द्वारा आम लोगों के लिए उन मूक फ़िल्मों का प्रदर्शन किया गया।